अंक 26 वर्ष-7वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1	संपादकीय	1
2	जे करम पूरब किये खोटे	2-3
3	मनुष्य पर्याय बर्बाद करते लोग	4
4	नम्रता से महानता/पहले शिष्य बनो	5
5	कविवर भागचंद	6
6	मीनाक्षी मंदिर/अचार का त्याग	7
7	धन्य थे गुरुदेव	8
8	चंद्रगुप्त का पूर्व भव	9
9	हमें याद क्यों नहीं होता	10
10	बंधन का दुख	11-13
11	मेरी भावना	14-15
12	शील की रक्षा	16-17
13	माता के सोलह सपने	18
14	जैन ध्वज	19
15	तीर्थंकर पहेली	20
16	ढूंढते रह जाओगे	21
17	यर्जुवेद में भगवान महावीर	22
18	गलती का प्रायश्चित	23
19	हैलो... का रहस्य	24
20	प्रतिभाशाली बालिकायें	25
21	कॉमिक्स-उत्तम त्याग	26-27
22	समाचार	28
23	जन्मदिवस	29
24	पेप्सी-कोका-कोला	30-32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106

संपादकीय

बच्चो! अनंत सिद्धों को नमन करते हुये आपको जय जिनेन्द्र। आपकी परीक्षायें समाप्त हो गईं होंगी और अनेक कक्षाओं के परीक्षा परिणाम भी आ गये होंगे। आप सबको परीक्षा में उत्तीर्ण होने की बधाई। यदि किसी के कुछ नम्बर कम मिलें हों तो निराश नहीं होना। भाई! कक्षा में अनेक छात्र रहेंगे तो कोई न कोई तो पीछे रहेगा ही ना। स्कूल की परीक्षा में कम नंबर आयें तो कोई बात नहीं परन्तु धर्म में कभी पीछे मत रहना। छुट्टियों में बाल शिविर में जरूर जाना। सच्ची पढाई तो धर्म की है। आपकी स्कूल की पढ़ाई तो इसी भव तक ही काम आयेगी लेकिन धर्म का अध्ययन अनंतकाल साथ देगा। आचार्य कुन्दकुन्द की पूर्व पर्याय में सीखे हुये महामंत्र णमोकार ने उसके जन्म-मरण का अंत निश्चित कर दिया।

इन छुट्टियों में वीडियो गेम खेलकर हिंसा का महापाप नहीं करना बल्कि ज्ञानवर्द्धक गेम खेलना और जिनधर्म की कहानियों में से एक कहानी प्रतिदिन पढ़ना। इससे आपको जीवन जीने के मंत्र मिलेंगे और आप जीवन भर सुख-दुख में प्रसन्न रहते हुये दूसरों को भी प्रेरणा देगें। फिल्मों के गाने नहीं बल्कि स्तोत्र पाठ, स्तुति, भजन, धार्मिक कवितायें याद करना और आपने क्या याद किया, हमें बताना तो हम आपका नाम और फोटो चहकती चेतना में प्रकाशित करेंगे। प्रतिदिन मंदिर अवश्य जाना, हो सके तो अपने आसपास के तीर्थक्षेत्र के दर्शन अवश्य करने जाना। अच्छा! अब बातें बहुत हो गईं आप चहकती चेतना के नये अंक का आनंद लीजिये।

आपका विराग

जे करम पूरब किये खोटे

जो कर्म करते समय समय सावधान नहीं रहता
उसे कर्म उदय में दुख ही भोगना होगा। बुरे कार्य करते समय मजा आता है
परन्तु जब कर्म उदय आया तो देखिये कैसा हाल हो गया –

इस व्यक्ति का चेहरा देखिये डर गये ना।
जिन मुद्रा के अपमान का फल है ये ....।

इसके पैरों का हाल देखिये।
तीर्थ यात्रा नहीं करने का
फल है ये.....।

इस व्यक्ति ने चेहरे पर रंग
नहीं लगाया। मेथोमोग्लोबिनेमिया
नामक बीमारी के कारण इसका चेहरे
का रंग बदल गया।

माँ की गोद में यह बेटी।
शरीर एक परन्तु चेहरे दो।
मिस्र के बानहा शहर में
इसका जन्म हुआ।

इस बालक का दिल
शरीर के बाहर है।
काश! मैंने पाप नहीं किये होते...

नेपाल के चरीकोट में मेंढक के शरीर जैसे शरीर वाले बालक का जन्म हुआ। अज्ञानियों ने उसे भगवान मान लिंया। यह बालक कुछ समय मर गया। मनुष्य पर्याय व्यर्थ हो गई।

हे भगवान! कैसा रूप मिला
इस बालक की एक ही आंख है
और नाक तो है ही नहीं।
सायक्लोपिया नामक बीमारी
के कारण ऐसा हुआ।

ना जाने किन पापों का फल है ये।
चीते जैसी धारियों वाला यह
बालक। पाकिस्तान के गिलकिट
में जन्मा और मर गया।

जम्मू में रहने वाला लतीफ खतना नाम
यह व्यक्ति। एक खतरनाक बीमारी के
कारण इसका चेहरा इस तरह का हो गया।

**सावधान! अपने परिणाम जिनेन्द्र भक्ति और स्वाध्याय में लगाइये
वरना अनंत दु:खों की पीड़ा होगी।**

मनुष्य पर्याय की बरबादी

ये मनुष्य पर्याय सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिये मिली है परंतु देखो इन मानवों को। यश के लिये विचित्र रूप बनाये।

इस व्यक्ति के चेहरे को देखिये इसने मात्र रिकार्ड के लिये अपने चेहरे पर 280 छेद करके पियर्सिंग पहने.

शौक के लियेअपनेकान में इतना बड़ा छेद करवा लिया.

हे भगवान कैसा शौक कुछ नया करने के चक्कर में अपने हाथ पर मांस निकलवा कर भी लिखवाया.

लोग मुझे देखें बस इसलिये अपनी आंखों को रंगीन करने के लिये आंखों में रंग डलवाती महिला.

आखों में सितारा हे प्रभो ! कैसा शौक है ये

शरीर को छेदकर भी आभूषण पहनने का सुख चाहिये.

नम्रता से महानता आती है

सुराही के समय में लोग सुराही से ठंडा पानी पीते हैं। सुराही के मुँह पर एक कटोरी ढकी हुई रहती थी। एक बार कटोरी सुराही बोली - क्यों सुराही बहन! तुम मेरे साथ इतना अन्याय क्यों करती हो ? सुराही ने आश्चर्य से पूछा – कैसा अन्याय ? कटोरी बोली – अरे! तुम सबको पानी पिलाती हो, परन्तु मैं चौबीस घंटे तुम्हारे पास रहती हूँ, पर मैं प्यासी ही रहती हूँ। ऐसा क्यों ? सुराही बोली – कटोरी बहन! सब मेरे पास आकर झुकते हैं और मेरे चरणों में बैठते हैं। देखो! गिलास नीचे रहकर पानी मांगती है तो उसे पानी मिल जाता है तुम तो मेरे सिर पर सवार रहती हो। तुम्हें पानी कैसे मिलेगा ? विनम्र व्यक्ति ही शिक्षा पाने का अधिकारी होता है। घंमडी व्यक्ति जीवन भर खाली हाथ ही रहते हैं। कुछ पाना है तो झुकना सीखो।

कटोरी को यह बात पसंद आ गई वह तुरंत नीचे आई और सुराही ने उसे पानी से तृप्त कर दिया।

पहले शिष्य बनो

लंका नरेश रावण लक्ष्मण के तीरों से घायल हो गये और उनके जीवन का अंतिम समय था। राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ रावण के पास गये और रावण को देखकर लक्ष्मण से बोले– भ्राता लक्ष्मण! लंकाधिपति रावण महान विद्वान हैं, अनेक कलाओं के ज्ञाता हैं। जाओ! उनके समीप जाओ और कुछ उपदेश ग्रहण करो। राम का आदेश पाकर लक्ष्मण रावण के सिर के पास खडे हो गये और रावण से निवेदन किया –हे लंकेश! आप हमें कुछ ज्ञान संदेश दीजिये। रावण कुछ नहीं बोला। यह देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा– लक्ष्मण! शिक्षा विनम्रता से मिलती है। तुम रावण को गुरु मानो और उनके चरणों में आकर शिष्य बनकर उपदेश की प्रार्थना करो। लक्ष्मण को तुरंत अपनी भूल समझ में आई और रावण के चरणों के पास आकर उपदेश की प्रार्थना की तब रावण ने प्रसन्न मन से लक्ष्मण को जीवन के उपयोगी सूत्र बताये।

इस प्रसंग से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें शिक्षा विनम्र होकर ग्रहण करना चाहिये और अपने गुरुजनों का सन्मान करना चाहिये।

प्रवचनांश–पं. राजेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

ऐसे थे कविवर पण्डित श्री भागचंदजी

दिगम्बर जैन समाज में अत्यंत लोकप्रिय स्तोत्र महावीराष्टक के रचनाकार पण्डित श्री भागचंदजी अत्यंत स्वाभिमानी थे। उन्होंने ग्रन्थों के साथ अनेक आध्यात्मिक भजनों की रचना की। उनके भजन अत्यंत लोकप्रिय थे। वे अत्यंत निर्धन थे परन्तु उन्होंने अपनी समस्या के बारे में कभी किसी से कुछ नहीं कहा। जब आजीविका का कोई साधन नहीं रहा तो उन्होंने अपने परिवार के साथ चुपचाप रात को अपना नगर छोड़ दिया और जयपुर की ओर रवाना हो गये। रुपये नहीं होने के कारण वे पैदल ही चल पड़े। वे 2 दिन तक भूखे रहे। रास्ते में एक धर्मशाला के आंगन में रुक गये। जब वे मजदूरी करने जा रहे थे तो पहले जिनमंदिर गये। जिनमंदिर में प्रवचन चल रहा था वे उसे सुनने के लिये चुपचाप पीछे बैठ गये। प्रवचन के पश्चात् उन्होंने स्वयं की रचना ''सांची तो गंगा यह वीतराग वाणी'' स्तुति गाई तो सभी प्रसन्न हो गये। एक भाई ने पूछा – भाई ! यह भागचंदजी का भजन आपको कहाँ से मिला। भागचंदजी चुपचाप सिर नीचे करके वहाँ से जाने लगे। लोगों ने उनसे अधिक आग्रह किया तो उन्होंने कहा कि मैं ही कवि भागचंद हूँ। सभी ने यह सुना तो सभी अत्यंत प्रसन्न हो गये और जब उन्हें पण्डितजी निर्धनता की जानकारी मिली तो समाज के लोगों ने कहा पण्डित जी ! हमारा सौभाग्य है कि आप जैसे विद्वान हमारे यहाँ पधारे। आप हमारे ही नगर में रहें और हमें प्रतिदिन स्वाध्याय का लाभ दें और आपके भोजन, निवास और व्यापार की व्यवस्था हम कर देंगे। पण्डितजी ने गंभीरता से कहा – मैं समाज के आश्रय से नहीं रहना चाहता। आज तो धन लक्ष्मी रूठी है यदि मैंने स्वाध्याय से धन लिया तो ज्ञान लक्ष्मी भी रूठ जायेगी।

6 दिन बाद समाज से कर्ज लेकर पण्डितजी ने कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया और 4 वर्ष में 5000 रुपये कमाये और समाज को पूरी राशि लौटा दी।

दक्षिण के प्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर का इतिहास

पांड्य देश में जैन राजा वीर पांड्य का पुत्र कुल पांड्य राज्य करता था। वह जैन धर्म छोड़कर शैव धर्म को मानने लगा। उसका मंत्री मल्लिपण्डित जैन था। वह बड़ा विद्वान था। एक बार उसने एक उन्मत्त हाथी को वश किया तो राजा ने उसका नाम हस्ति मल्लिसेन रख दिया। राजा ने उसे शैव धर्म में लाने के लिये अनेक उपाय किये। जब उसके ऊपर अधिक दबाव पड़ने लगा तो वह नगर छोड़कर अपने पुत्र और कुछ ब्राह्मण और शूद्रों को लेकर केरल में जाकर बस गया।

कुल पांड्य ने पांड्य के देश के 985 और दक्षिण मथुरा के 50 जैन मंदिरों को नष्ट कर दिया। उसने पांड्यों के कुल देवता नेमिनाथ को छिपा दिया और नेमिनाथ की शासन देवी कुष्मांडिनी को मीनाक्षी बना दिया। तब से वह मंदिर मीनाक्षी मंदिर कहलाने लगा। आज यह दक्षिण भारत का प्रसिद्ध शैव मंदिर है।

– साभार – सिद्ध चतुर्दशी – लेखक – भैया भगवती दास जी,
डॉ ऊषा जैन एम.ए., पी.एच.डी. का लेख
श्री सुनहरी लाल जैन अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन वर्ष 1983 पृष्ठ 184

अचार का त्याग

कहान को अचार बहुत पसंद था। 19 वर्ष की आयु में एक दिन जब कहान दुकान से घर लौटे तो उन्हें भूख लगी थी। उन्हें अचार से रोटी खाने का मन हुआ तो उन्होंने सोचा कि क्यों भोजन के लिये किसी को परेशान करें। अपने हाथ से निकालकर खा लेंगे। उन्होंने अचार निकालने के पलंग के नीचे रखा अचार के बर्तन का कपड़ा अलग किया तो उसमें छोटे–छोटे जीव चलते दिखाई दिये। चम्मच से अचार निकाला तो उन्हें अचार में जीव चलते हुये दिखाई दिये। उन्होंने अचार का पूरा बर्तन निकाल लिया और अंदर देखा कि अचार में हजारों छोटे–छोटे जीव चल रहे थे। देखकर ही अचार से उनका मोह भंग हो गया। तुरंत उन्होंने आजीवन अचार न खाने की प्रतिज्ञा ले ली।

धन्य हैं गुरुदेव

सोनगढ के संत आध्यात्मिक संत कानजी स्वामी ने श्वेताम्बर सम्प्रदाय त्यागकर दिगम्बर धर्म स्वीकार किया था. उन्होंने संपूर्ण जीवन जिनवाणी के रहस्यों का उद्घाटन किया. दूर – दूर से अनेक मुनिराज और विद्वान उनसे चर्चा करने के लिये आते थे. एक बार आचार्य शांतिसागर महाराज सोनगढ पधारे. सोनगढ में उनका प्रभाव देखकर और उनके अनुभव रस भरे प्रवचन सुनकर आचार्य शांतिसागर ने कहा यह कोई महान पुरुष हैं. ये स्वयं तो मोक्ष जायेगें ही साथ असंख्य जीवों के मोक्ष जाने में निमित्त बनेंगे. सच में ऐसे थे हमारे महान गुरुदेव श्री....

कहान की ईमानदारी

सन् 1968 में कहान मुम्बई व्यापार का सामान लेने गये. जिस दुकान से कहान माल खरीद रहे थे उस दुकान के नौकर ने अपने मालिक से बिना पूछे एक बोरी कहान के सामान में ज्यादा डाल दी और कहान के पास आकर धीरे से बोला सेठ! लाओ मेरा इनाम एक रुपया. कहान ने आश्चर्य से पूछा – किस बात का एक रुपया भाई नौकर बोला – मैंने चोरी से 50 रुपये की एक बोरी आपके सामान में ज्यादा डाल दी है. कहान ने प्यार से समझाया – भाई! छोटे से जीवन के लिये ये खोटे काम अच्छे नहीं हैं. जाओ जाकर वह बोरी निकालकर अपने सेठ जी कोवापिस देकर आओ. कहान की प्रभावशाली बातें सुनकर उस नौकर कोअपनी गल्ती का अहसास हुआ.उसने बोरी सेठ को वापस कर रोते हुये क्षमा मांगी. सेठ ने भी उसे क्षमा कर दिया. ऐसी थी कहान की ईमानदारी।

सम्राट चन्द्रगुप्त का पूर्व भव

भारत के प्रसिद्ध सम्राट चन्द्रगुप्त पूर्व भव में एक निर्धन परिवार में जन्मे थे. वे बहुत सरल हृदय के व्यक्ति थे. उनमें व्यवसाय करने की बुद्धि भी नहीं थी. इस कारण उनके माता–पिता और भाइयों ने उन्हें घर से बाहर निकाल दिया. वे इधर–उधर भटकते हुये एक गांव में पहुँचे. वहाँ वे एक लकड़ी काटने वाले के यहाँ नौकरी करने लगे. वे उसके साथ लकड़ी काटने जंगल जाते थे. इस काम के बदले में उन्हें रहने की सुविधा और भोजन मिलता था. लकड़हारे के साथ रहते हुये वह लकड़ी काटना सीख गया लेकिन लकड़ी बेचना नहीं सीख पाया।

एक दिन किसी कारणवश लकड़हारे ने चन्द्रगुप्त के जीव का बहाना लेकर अपनी पत्नी को बहुत मारा। यह देखकर चन्द्रगुप्त का जीव नौकरी छोड़कर स्वयं लकड़ी काटने लगे. परन्तु वे व्यापार बुद्धि न होने के कारण लकड़ी तीन दिन तक नहीं बेच पाये. पैसा न होने से वे तीन दिन तक भूखे रहे. भूख के कारण उनका किसी भी कार्य में मन नहीं लग रहा था वे उदास होकर बैठे थे तभी उन्हें एक दिगम्बर मुनि आहार के लिये जाते दिखाई दिये. मुनि मुद्रा की सौम्यता देखकर उससे प्रभावित हो गये और उनके पीछे चल दिये. उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इनके पास पहनने के लिये एक वस्त्र भी नहीं है, हाथ में मयूर के पंख हैं और दूसरे हाथ में लकड़ी का एक पात्र है फिर भी इतने शांत और निराकुल दिखाई दे रहे हैं. शहर के बड़े धनवानों ने जब उन्हें अत्यंत श्रद्धा से आहार दिया तो वह आश्चर्य चकित हो गया. आहार के पश्चात् धनवान सेठों ने उस चन्द्रगुप्त के जीव को भी स्वादिष्ट भोजन कराया. आहार के बाद वह मुनिराज के पीछे गया. मुनिराज एक वन में विराजमान थे. मुनिराज से प्रभावित होकर उसने मुनिराज से दिगम्बर दीक्षा ले ली. जब उनकी आयु तीन दिन की शेष थी तब उन्होंने समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया, उसके बाद पुनः यहाँ आकर सम्राट चन्द्रगुप्त हुये. और उन्होंने इस पर्याय में राजा पद सुशोभित करने के बाद दिगम्बर मुनि दीक्षा लेकर आत्मकल्याण किया.

हमें याद क्यों नहीं रहता

आज अधिकांश लोगों की समस्या है कि उन्हें याद नहीं होता या वे जल्दी भूल जाते हैं. इस समस्या के अनेक कारण हैं. इनमें से एक प्रमुख कारण है हमारी अपने ज्ञान एवं ज्ञानियों के प्रति लापरवाही और उनका अविनय.

1. जो व्यक्ति जिन मंदिर जैसे धार्मिक स्थानों अथवा स्वाध्याय भवनों में शोर करते हैं, यदि कोई साधर्मी स्वाध्याय कर रहा हो वहाँ जोर से बोलना, ऊँचे स्वर से पूजन आदि पढ़ना, जय जयकार करना, यदि कोई नमस्कार कर रहा हो तो उसके सामने खड़े होना अथवा उसके सामने से निकलने से तीव्र ज्ञानावरणी कर्म का बंध होता है.
2. किसी व्यक्ति को स्वाध्याय में बाधा पहुँचाने से भी ज्ञानावरणी कर्म का बंध होता है.
3. किसी की पुस्तक फाड़ना, छुपाना, अपनी ही पुस्तकों को कहीं भी फेंक देना, गन्दी करना, पैरों पर रखना, किसी के मांगने पर उसे नहीं देना जिससे उसकी पढ़ाई का नुकसान होआदि कारणों से भी ज्ञानावरणी कर्म का बंध होता है.
4. कोई पढ़ाई कर रहा हो उस समय उससे अनावश्यक बातें करना, किसी पढ़ते हुये को बाधा पहुँचाने के लिये लाइट बंद करना, यदि कोई विषय आपको आता है और दूसरे को नहीं बताना, अच्छे नंबर लाने वालों से ईर्ष्या करना, पढ़ने में आलसी रहना, पढ़ने में छल कपट करना ये कार्य भी ज्ञानावरण कर्म के आस्रव के कारण हैं. टी.वी. देखना भी अपने ज्ञान का दुरुपयोग है.
5. सर्वज्ञ प्रभु, मुनिराजों, ज्ञानियों और विद्वानों आदि के जिनवाणी के ज्ञान का अपमान करने से, जिनवाणी की पुस्तकें अपवित्र स्थानों पर रखने से भी ज्ञानावरण कर्म का आस्रव होता है.

इन सब कारणों से एवं अपनी आत्मा का अविनय करने से जो कर्म बंधा जब वह उदय में आता है तो कुछ याद नहीं होता, याद की हुई बातें भूल जाते हैं, समय पर कोई बात याद नहीं आती. कई लोग पागल हो जाते हैं, याददाश्त चली जाती है.

इन सबसे बचने के लिये क्या करें

1 सदा अपने ज्ञान का सदुपयोग करें। अनुपयोगी साहित्य न पढ़े।
2. प्रतिदिन जितना बन सके स्वाध्याय अवश्य करें.
3. सर्वज्ञ भगवान, मुनिराजों, ज्ञानियों, विद्वानों की एवं उनके ज्ञान की अनुमोदना करें.
4. जिनवाणी को हमेशा साफ, स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर रखें.
5. हमेशा अध्ययन में दूसरों का सहयोग करें, बाधा नहीं पहुँचायें. स्वयं से अधिक जानने वालों की प्रंशसा करें
6. अपनी पुस्तकों को साफ रखें, पेपर फाड़कर यहाँ वहाँ न फेकें.
7. मंदिरों और स्वाध्याय भवन में मंद स्वर से बात करें, धीमे स्वर से पूजा स्तोत्र पाठ करें.

आचार्य कुन्दकुन्द देव पूर्व भव में ग्वाला थे. एक बार उन्होंने अत्यंत पवित्र भाव से एक जिन शास्त्र को एक मुनिराज का समर्पित किया. इसके फल में वे अगले भव में आचार्य कुन्दकुन्द देव जैसे महान आचार्य हुये.

बंधन का दु:ख

आवि 10 वर्ष का लड़का था। बहुत शैतान और शरारती। जानवरों और छोटे–छोटे जीवों को परेशान करने में उसे बहुत आनंद आता था। वह कभी कुत्ते की पूंछ में पटाखा बांध देता, कभी टिड्डे (एक उड़ने वाला जीव) की पूंछ में धागा बांधकर उसे उड़ाता, कभी चींटी के चारों ओर पानी का घेरा बनाकर उसका रास्ता बंद करता, कभी चूहे को पिंजरे में बंद कर उसे भूखा रखकर उसे परेशान करता, कभी गाय के सींग में गुब्बारे बांध देता। उसकी मम्मी ने उसे कई बार समझाया परंतु आवि मम्मी की बात को हंसी में टाल देता था। उसे लगता कि इन कामों से तो मेरा मनोरंजन होता है ऐसे काम क्यों न करूँ?

एक दिन जब वह मंदिर गया तो वहाँ बाल संस्कार शिविर का आयोजन हो रहा था। उसकी उम्र के बहुत सारे बच्चे मंदिर में बैठकर धार्मिक कक्षा का लाभ ले रहे थे और सामने एक युवा विद्धान बच्चों को सरल शैली में जिनवाणी की बातें समझा रहे थे। सारे बच्चे उनकी बात सुनकर बहुत प्रसन्न थे। बच्चों को प्रसन्न देखकर आवि भी बच्चों के पीछे जाकर बैठ गया और उन युवा विद्धान की बातें ध्यान से सुनने लगा। वे कह रहे थे– देश के स्वतंत्र होने के पूर्व भारत के महान क्रांतिकारी श्री बाल गंगाधर तिलक ने एक नारा दिया था –स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसे ही हमारे अरहंत प्रभु कहते हैं मुक्ति प्रत्येक जीव का जन्म सिद्ध अधिकार है। संसार में अनेक बंधन हैं। किसी भी गति का जीव बंधन में रहना पसंद नहीं करता। जीव को बंधन में रखना तो महापाप है इसलिये हमें दूसरे जीवों पर करुणा रखना चाहिये साथ ही अपनी आत्मा की मुक्ति के लिये सम्यग्दर्शन का प्रयास करना चाहिये।

तभी एक बालक ने पूछा –पंडितजी! बंधन से छूटने का क्या उपाय है?

देखो! मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ–पंडितजी ने बैठते हुये कहा।

एक राजा के यहाँ एक बोलने वाला तोता था। वह सोने के पिंजरे में रहता था, उसे काजू, किशमिश, बादाम खाने को दिये जाते थे। फिर भी वह पिंजरे से बाहर निकलने का प्रयास करता था। एक दिन राजा शिकार करने जंगल जा रहा था उसने तोते से कहा – मैं आज जंगल जा रहा हूँ। वहाँ तुम्हारे कई दोस्त मिलेंगे उनसे कुछ कहना है तो बता दो। तोता बोला – मेरे मित्रों से कहना कि मैं राजमहल में सोने के पिंजरे में रहता हूँ, काजू–किशमिश खाता हूँ परन्तु मुझे नींद नहीं आती। जंगल जाकर राजा ने तोते के मित्रों से अपने तोते की बात कही। तोते समझ गये कि हमारा मित्र बहुत दुःखी है। राजा की बात सुनकर सारे तोते तुरंत जमीन पर गिर पड़े। इतने सारे तोतों को जमीन पर पड़ा देखकर राजा घबरा गया और तुरंत महल वापस आ गया और तोते को सारे तोतों की दशा सुनाई तोअपने मित्रों की दशा सुनकर पिंजरे का तोता भी पिंजरे में गिर पड़ा। राजा ने सोचा कि यह तो मर गया। उसने पिंजरे का दरवाजा खोलकर उस तोते को बाहर निकालकर जमीन पर रखा तो वह तुरंत आकाश में उड़ गया और उड़ते हुये बोला – बंधन में स्वर्ग का सुख भी बेकार है और मुक्ति के सुख में जगत के सारे संकट मंजूर हैं।

यह कहानी सुनकर बच्चे बोले– वाह ! तोता कितनी होशियारी से आजाद हो गया। पंडितजी बोले–हाँ बच्चो ! हमें भी किसी जीव की स्वाधीनता में कभी बाधा नहीं पहुँचाना चाहिये।

आवि ने सारी बातें ध्यान से सुनी तो उसे अपनी सारी शरारतें याद आने लगीं। वह यही विचार करते हुये चुपचाप घर आया और अपने कमरे का दरवाजा बंद करके सो गया। आवि के पापा ऑफिस गये थे और मम्मी को घर का सामान लेने के लिये बाजार जाना था। उन्हें तो आवि के घर पर आने का पता ही नहीं चला और उन्होंने घर के सारे कमरे बाहर से बंद कर दिये और चली गई। थोड़ी देर बाद जब आवि की नींद खुली तो जोर से भूख लगी तो कमरे के बाहर आना चाहा लेकिन कमरा बाहर से बंद होने के कारण नहीं खुला। आवि अंदर मम्मी को आवाज दी परन्तु मम्मी तो घर पर नहीं थी। मम्मी का कोई जवाब न मिलने से वह

घबरा गया और जोर–जोर से चिल्लाने लगा और रोने लगा। कभी दरवाजे को जोर – जोर से मारता तो कभी पैर पटकता। उसे याद आने लगा कि किस तरह उसने भी जानवरों को और छोटे जीवों को सताया है। जब मुझे इतने से समय के बंधन में इतना दुःख हो रहा है तो उन बेचारे प्राणियों का क्या होता होगा लगभग 1 घंटे बाद जब उसकी मम्मी वापस लौटी तो उसे मम्मी के आने की आवाज सुनाई दी उसने जोर से आवाज लगाई। मम्मी मुझे बाहर निकालो। आवि की आवाज सुनकर मम्मी ने जैसे ही दरवाजा खोला वह रोते हुये मम्मी से चिपक गया और जोर –जोर से रोने लगा। मम्मी सारी घटना तुरन्त समझ गईं। आवि कह रहा था मम्मी ! मैं अब किसी जीव को नहीं सताऊँगा, किसी को तंग नहीं करूँगा। सॉरी मम्मी सॉरी। मम्मी मुस्कराते हुयेअपने बदले हुये आवि के सिर पर हाथ फेर रहीं थीं।

– विराग शास्त्री, जबलपुर

आभार

विभिन्न प्रसंगों में निम्न महानुभावों द्वारा तत्वप्रचार – प्रसार हेतु आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर को आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। इसके लिये सभी दानदाताओं का आभार।

5,000/- अक्षत नीतेश जैन, मुम्बई

1,111/- अनुभूति स्वप्निल शाह, पुणे

250/- कु. स्वनि स्वप्निल जैन के दादी श्रीमति सुनीता सुरेश जैन, इतवारी नागपुर की ओर से प्राप्त।

250/- अलीगंज निवासी डॉ. मुकेशचन्द्र जैन की सुपुत्री पल्लवी के शुभ विवाहोपलक्ष्य में प्राप्त।

जन्मदिवस की शुभकामनायें

पंच परमेष्ठी की सदा, जग में हो जयकार।
श्री जिनवर राकेश हैं, देते सौख्य अपार।।

जय राकेश गांधी, दाहोद गुज. 26अगस्त 1999

मेरी भावना

रचनाकार – पं.जुगलकिशोर जी मुख्तार

इससे पूर्व के अंक में आप मेरी भावना के
प्रारंभ के चार छंदों का अंग्रेजी भावार्थ पढ़ चुके है, अब आगे..

5

मैत्री भाव जगत मे मेरा, सब जीवों से नित्य रहे,
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा स्त्रोत बहे ।
दुर्जन, कुर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्य भाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ।।

May I always entertain a feeling of friendliness for all living beings in the world; May the spring of sympathy in my heart be ever bubbling for those in agony and affiction; May I never feel angry with the vile, the vicious and the wrongly-directed. May there be such an adjustment of things that I may always remain tranquil in dealing with them!

6

गुणी जनों को देख ह्रदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे,
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ।।

May my heart ever overflow with love at the sight of virtuous men; May this mind (of mine)rejoice always in serving them to the utmost of its power;
May i be never ungrateful;
May jealousy never approach me;
May my longing be always for assimilating the virtues of other; and
May the eyes never alight on their faults!

7

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे ।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ।।

Whether people speak of me well or ill;
Whether wealth comes to me or departs;
Whether I live to be hundreds of thousands years old;
Or give up the ghost this day;
Whether any one holds out any kind of fear;
Or with worldly riches he tempts me;
In the face of all these possible things may my footsteps
swerve not from the path of Truth!

8

होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावे,
पर्वत-नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहीं भय खावे ।
रहे अडोल-अकंप निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग-अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे ।।

With pleasure may the mind be not puffed up;
Let pain disturb it never;
May the awesome loneliness of a mountain, forest or river,
Or a burning place, never cause it a shiver.
Unmoved, Unshakable, firmness may it grow adamantine.
And display true moral strength when parted from the desired
thing or united with what is undesired!

शेष अगले अंक में ....

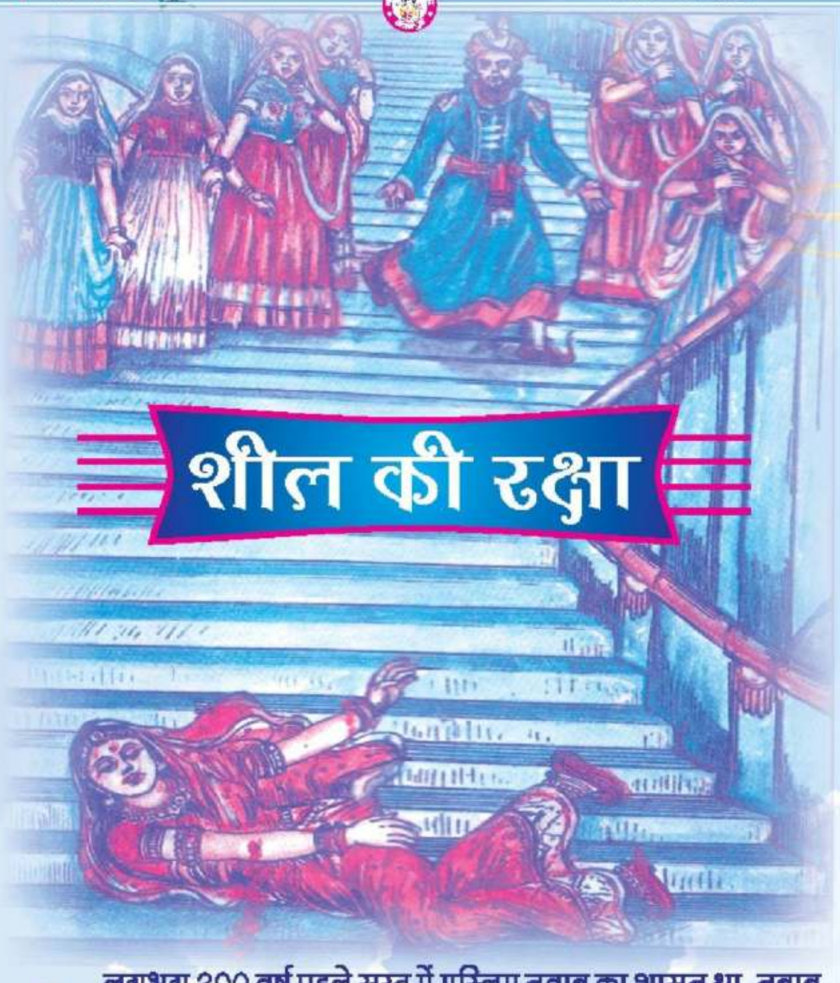

शील की रक्षा

लगभग 200 वर्ष पहले सूरत में मुस्लिम नवाब का शासन था. नबाब नगर के किसी सेठ से मनचाहा धन मांग लिया करता था और प्रजा पर अत्याचार किया करते थे. नवाब को मालूम हुआ कि सूरत के एक सेठ के पास बहुत धन है. वह उस सेठ के घर पहुँच गया. सेठ ने नवाब का पूरा सन्मान करते हुये उनके घर पर आने का कारण पूछा. इतने में सेठ की सुपुत्री मानबा नवाब को देखने के लिये आई. जैसे ही नवाब ने मानबा को देखा तो उसकी सुन्दरता को देखता ही रह गया. यह देखकर मानबा डरकर वहाँ से भाग गई. नवाब ने सेठ से लड़की का नाम पूछा और महल वापस लौट गया.

दूसरे दिन नवाब ने सेठ को अपने महल में बुलाकर सेठ से कहा कि सेठजी ! मैं आपकी पुत्री को अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ, यदि आप मेरी बात

मान लेंगे तो आपको राज्य में बड़ा पद मिलेगा और आप यदि मेरी बात नहीं मानेंगे तो आपका सारा धन लूटकर आपको जेल में डाल दिया जायेगा. आपको अभी और यहीं पर निर्णय करना होगा.

सेठ क्या करता उसने मजबूरी में नवाब का प्रस्ताव मंजूर कर लिया. नवाब ने सेठ के साथ मानबा को लेने के लिये पालकी और सैनिक भेज दिये. सारी बात सुनकर मानबा बहुत दुखी हुई. उसकी माता भी जोर – जोर से रोने लगी. लेकिन कोई उपाय नहीं था. मानबा पालकी में बैठकर नवाब के महल की ओर चली. महल में मानबा के स्वागत में शहनाईयाँ बज रहीं थीं, महल के दरवाजे पर दासियाँ मानबा का स्वागत करने के लिये खड़ीं थीं. नवाब का महल उँचाई पर था, मानबा पालकी से उतरकर सीढ़ियाँ चढ़ने लगी. वह मन में अपने शील की रक्षा का उपाय सोच रही थी. नवाब उसका स्वागत करने के लिये ऊपर खड़ा था और मानबा को देखकर अत्यंत प्रसन्न हो रहा था. मानबा सीढ़ियाँ चढ़ती जा रही थी जब कुछ ही सीढ़ियाँ बाकी थीं तभी वह जानबूझकर सीढ़ी पर गिर पड़ी और वह सीढ़ियों से लुढकती हुई सीधे नीचे आ गई. शहनाईयाँ बंद हो गईं, दासियाँ भय से कांपने लगीं, नवाब पागलों की भांति भागता हुआ नीचे आया और मानबा को उठाया. लेकिन मानबा के प्राण निकल चुके थे. मानबा ने जीवित रहते हुये अपनी देह को अपवित्र नहीं होने दिया और मरकर भी अपने शील और धर्म की रक्षा की. धन्य है मानबा.........

- वीर बालिका से साभार

संस्था द्वारा 5000/- रु. में संस्था की 15 वर्षीय सदस्यता प्रदान की जाती है।
इस योजना में अब तक निम्न महानुभावों ने सदस्यता प्राप्त की है।

1. श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, वापी 2. भव्य सी. मेहता, मुम्बई 3. श्री खेमचंदजी शास्त्री, उदयपुर 4. प्रियंका हेमंत डेलीवाला, बढ़वाण, सुरेन्द्र नगर 5. श्री रिषभ हेमल जोबालिया, मुम्बई 6. श्री नितिन पाटनी, वाशिम 7. श्री सुभाष गंगवाल, परभणी 8.श्री वेदप्रकाशजी जैन 9. श्रीमति सीमा विनय जैन, भायंदर 10. श्री सुरेशचंद प्रवीण कुमार जैन, सिलचर 11. श्री अंकुर शास्त्री, मैनपुरी 12. जैनम अतुल दोशी, ईडर 13. वंशी स्मित शाह, मुम्बई 14. प्रज्ञा बेन अनिलभाई सेठ, घाटकोपर मुम्बई 15. श्री नवीन भाई केशवलालजी मेहता, मुम्बई 16. श्री अनन्त शास्त्री, विकोली, मुम्बई 17. श्रीमति रुचि पी. देसाई, पुणे 18. श्री पणव मंथन मोदी, घाटकोपर, मुम्बई 19. श्रीमति लीना सचदेव, घाटकोपर, मुम्बई 20. श्री भंवरलाल जैन, ईरोड तमिलनाडु 21. श्री विवेक पाटनी, वाशिम 22. श्री आशीष जैन कोटा 23. श्री मनोज जैन, कोटा 24. श्रीमती उमा पालीवाल, कोटा 25. श्रीमती अमिता जैन, कोटा 26. श्री सुशील कुमार पाटोदी 27. श्री भानुकुमार पाटनी, कोटा ।

तीर्थंकर की माता के सोलह सपने

तीर्थंकर के गर्भ में आने के 6 माह पूर्व से ही आकाश से रत्नों की वर्षा होने लगती है। तीर्थंकर की माता 16 सपने देखतीं हैं। इन सपनों से आने वाले जीव के चरित्र के बारे में संकेत मिलता है। महावीर के गर्भ में आने के पूर्व माता त्रिशला ने भी 16 सपने देखे। आइये जानें - ये सपने कौन से थे और इनका फल क्या होता है -

1. हाथी - अति गंभीर होगा।
2. बैल - तीनों लोकों का स्वामी होगा।
3. सिंह - अनंत वीर्य का धारक होगा।
4. लक्ष्मी का अभिषेक - मेरु पर्वत पर अभिषेक होगा।
5. दो मालायें - मुनि धर्म और श्रावक धर्म का धारक होगा।
6. चन्द्रमा - तीनों लोकों को शान्ति देने वाला होगा।
7. सूर्य - तेजस्वी होगा।
8. दो मछली - सुखी होगा।
9. कलश - निधियों का स्वामी होगा।
10. सरोवर - समस्त शुभ लक्षणों से युक्त होगा।
11. समुद्र - सर्वज्ञ होगा।
12. सिंहासन - सभी के द्वारा पूज्य होगा।
13. विमान - स्वर्ग से अवतार लेगा।
14. रत्नों की राशि - शुभ गुणों से मंडित होगा।
15. नागेन्द्र का भवन - जन्म समय तीन ज्ञान का धारी होगा।
16. धुंआ रहित अग्नि - कर्मों को जलाने वाला होगा।

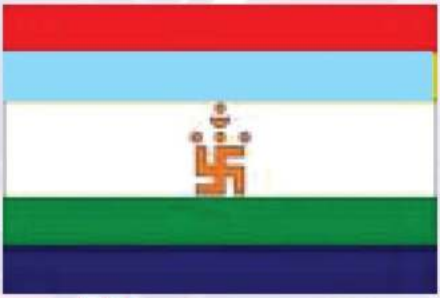

जैन ध्वज

जैन ध्वज पांच रंग का होता है।

यह ध्वज पंचपरमेष्ठी का प्रतीक है, साथ ही यह विश्वधर्म, विश्व प्रेम, विश्व शान्ति का उद्घोषक है।

यह ध्वज जिनमंदिरों के शिखरों पर देखा जाता है और विशेष धार्मिक कार्यक्रमों में इसे फहराया जाता है।

यह ध्वज आयत के आकार का होता है. इसकी लम्बाई चौड़ाई का अनुपात 3:2 है।

इस ध्वज में पाँच रंग होते हैं. लाल, पीला, सफेद, हरा और गहरा नीला. लाल, पीले, हरे और गहरे नीले रंग की पट्टियाँ चौड़ाई में एक समान होती हैं तथा सफेद रंग की पट्टी की चौड़ाई अन्य रंगों की पट्टी से दुगुनी होती है।

पांच रंग पंच परमेष्ठी के प्रतीक माने गये हैं।

स्फटिकं श्वेतं रक्तं च पीत – श्यामनिभं तथा।

एतत्पन्चपरमेष्ठिनः पन्चवर्णं यथाक्रमम् ॥

विशेष रूप से सफेद रंग अहिंसा एवं शक्ति का, लाल रंग सत्य एवं कल्याण का, पीला रंग अचौर्य का, हरा रंग ब्रह्मचर्य का, नीला रंग अपरिग्रह का संकेत माना जाता है।

ध्वज के बीच में स्वस्तिक होता है इसका रंग केशरिया होता है।

हमें सदैव जैनध्वज का सन्मान करना चाहिये. ये जिनधर्म का प्रतीक है।

इन प्रश्नों के उत्तर में एक तीर्थंकर का नाम छिपा हुआ है ध्यान से सोचिये और पाइये तीर्थंकर का नाम –

1. संसार का हर व्यक्ति चाहता है – ----------
2. परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर होता है – ----------
3. जिन्हें पशुओं का बंधन देखकर वैराग्य हुआ – ----------
4. जिन्होंने आहार दान की परम्परा का शुभारम्भ किया – ----------
5. जो सूर्य के उदय होने पर खिल जाता है – ----------
6. जिसके स्पर्श करने से लोहा भी सोना बन जाता है – ----------
7. जो भारत की एक प्रसिद्ध कपड़े की कंपनी है – ----------
8. जिसके दांत फूलों के समान हों – ----------
9. जहाँ कोई भी कार्य असंभव न हो– ----------
10. युद्ध में अपने बाहुबल से जीतकर आने वाला – ----------
11. जिनके नाम में 'पास' का पर्यायवाची है – ----------
12. जिनके शासन में राम का मोक्ष हुआ – ----------
13. जिसे हर कोई करना चाहता है – ----------
14. गर्मी के मौसम क्या अच्छा लगता है – ----------
15. जिसका 'प्रांरभ' होता हो– ----------
16. वीरों में वीर हैं वे– ----------
17. जो अच्छी बुद्धि वाला हो– ----------
18. जो रात्रि में प्रकाश के साथ शीतलता देता है – ----------
19. जिनका नाम 'क' से प्रारंभ होता है – ----------
20. जिनका चिन्ह है नील कमल – ----------
21. जिसका अंत नहीं होता – ----------
22. जिसके पांच कल्याणक एक स्थान पर हुये– ----------
23. जिसे कोई नहीं हरा सकता हो– ----------
24. जिनका चिन्ह बकरा है – ----------

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में दिये हैं।

पहले अपनी बुद्धि लगाईये और फिर मिलाइये कितने उत्तर सही हैं।

ढूंढते रह जाओगे

सिनेमा के दर्शन तो बहुत मिलेंगे, दूरदर्शन केबल घर – घर की शोभा बनेंगे
नगर – नगर गांव – गांव गली – गली में गाने बजेंगे
पर मन्दिर में भक्ति की आवाज ढूंढते रह जाओगे

जिनवाणी को घर से निकालेंगे, उपन्यास फिल्मी पत्रिका सब पढ़ डालेंगे
माँ जिनवाणी की सुरक्षा और श्रवण करने वालों को ढूंढते रह जाओगे।

कल तक जिस जग हंसता था, रात्रि भोजन से डरता था
पर आगे कुछ ऐसा होगा देखकर सबको अचरज होगा,
मात्र दिन भोजन करने वालों को ढूंढते रह जाओगे।

आदर्श जीवन पत्नी का, हिन्दी में पढ़ना बच्चों का
सती सी सादगी नारियों की, मीठी बोली पुरुषों की
साड़ी पहनती बहनों को, घूंघट ओढ़ती दुल्हनों को ढूंढते रह जाओगे।

घर में नहीं, होटल में खायेंगे, साधर्मियों से नहीं मोबाइल से रिश्ता निभायेंगे
डिस्को डांस करके, पेप्सी – कोका कोला पीकर अपने पर इतरायेंगे
पर छानकर शुद्ध पानी पीने वालों को ढूंढते रह जाओगे।
देवालय में देव दर्शन पूजा कराने वाले रखे जायेंगे
भक्ति का प्रदर्शन, कैसे होगा सम्यग्दर्शन
गृहीत मिथ्यात्व को दूर हटाना, अगृहीत से पीछा छुड़ाना
इक्कीसवीं सदी में ढूंढते रह जाओगे।

अभी मानव जीवन हमें मिला है, साथ में जैनधर्म सौभाग्य से मिला है
ध्यान इस पर नहीं दिया तो, जीवन अपना बिगड़ गया तो
ऐसा उत्तम जिनधर्म पाना और निगोद में जाकर
फिर वापस आना ढूंढते रह जाओगे।

पण्डित विनोद जैन, (गुना) सोनागिर

हिन्दू धर्म के प्रमुख ग्रन्थ यजुर्वेद में भगवान महावीर की उपासना

यजुर्वेद में भगवान् महावीर की उपासना

आतिथ्यं रूपं मासरं महावीरस्य नग्नहुः ।
रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्रीः सुरासुता ॥ १४ ॥

—यजुर्वेद[1] अ० १९ । मन्त्र १४

अर्थात्—अतिथि स्वरूप पूज्य मासोपवासी नग्न स्वरूप महावीर[2] की उपासना करो जिससे संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय रूप तीन अज्ञान और धन मद, शरीर मद, विद्या मद की उत्पत्ति नहीं होती[3] ।

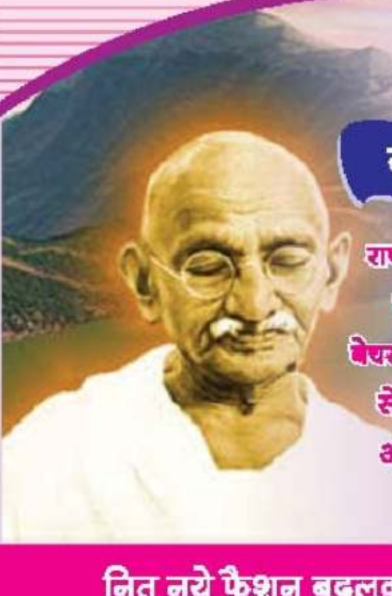

क्या आप जानते हैं ?

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जब इंग्लैंड अध्ययन करने गये थे तब उनकी मां ने जैन साधु बेचर जी स्वामी से उन्हें मांस, मदिरा और पर स्त्री सेवन त्याग की शपथ दिलाई. जैनत्व और अहिंसा के सस्कारों का पालन गांधी जी ने जीवन भर किया.

नित नये फैशन बदलकर बन गये सब युवक हीरो,
रंग गये पाश्चात्य रंग में धर्म में रह गये जीरो ।
किस तरह भाई किनारे धर्म की नैया लगेगी,
मंगलम् भगवान वीरो, मंगलम् भगवान वीरो ॥

गल्ती का प्रायश्चित

चंपा नगर के नरेश उदयभानु अत्यंत शांतिप्रिय और धर्म प्रेमी जीव थे। वे किसी छोटी – बडी समस्या आने पर विचलित नहीं होते थे। किन्तु उनका पुत्र राजकुमार प्रलयंकर बहुत दुष्ट प्रवृत्ति का था। वह धन का दुरुपयोग करता था। फिर भी राजा उसे कुछ नहीं कहते थे।

मंत्री राजा को समझाते – राजन् ! राजकुमार को वश में करना चाहिये अन्यथा राज्य को बहुत हानि हो सकती है। राजा ने कहा – मंत्रीवर ! मेरे समझाने से उस पर कुछ असर नहीं होता। उसकी जो होनहार होगी वही होगी। जब उसके सुधरने का अवसर आयेगा तब सुधर जायेगा। एक दिन राजकुमार प्रलयंकर ने सोचा कि क्यों न पिताजी को मारकर स्वयं राजा बन जाऊँ, फिर मुझे रोकने वाला कोई नहीं होगा, जो मन में आयेगा वह करूँगा।

पूरी योजना बनाकर एक दिन वह तलवार से सोते हुये पिता पर आक्रमण करने ही वाला था कि तलवार पलंग से टकराकर नीचे गिर पड़ी। तलवार की आवाज सुनकर पिता की नींद खुल गई। राजा तुरंत समझ गया कि बेटा मुझे ही मारने आया था। राजा ने कहा – पुत्र ! जल्दी तलवार उठाओ और मुझे मार डालो। यदि कोई आ जायेगा तो तुम अपना काम नहीं कर पाओगे। इतना कहकर राजा ध्यान की मुद्रा में बैठ गया। यह देखकर राजकुमार अपने पिता के चरणों में गिर पड़ा और बोला पिताजी ! मैं राज्य के लोभ में महापाप करने वाला था। मुझे क्षमा करें। मैं अपने पापों का प्रायश्चित करूँगा।

प्रलयंकर ने तलवार उठाकर अपनी गर्दन काटनी चाही किन्तु राजा ने तलवार छीन ली और कहा बेटा ! यह मनुष्य भव इस तरह समाप्त करने के लिये नहीं मिला। मनुष्य भव में सम्यग्दर्शन प्राप्त करके हमें जन्म–मरण का अभाव करना चाहिये। बेटा ! मैंने तो बहुत राज्य कर लिया अब तुम इस राज्य पर न्याय, नीति, करुणा से राज्य करना। मैं आत्मकल्याण करने के लिये दिगम्बर मुनि दीक्षा लूँगा।

राजकुमार ने कहा – पिताजी ! प्रायश्चित तो मुझे करना चाहिये। आप अपना राज्य संभालें, मैं दीक्षा लूँगा। इस तरह दोनों पिता – पुत्र दीक्षा के लिये तैयार हो गये। राजा ने अपने छोटे बेटे का राजतिलक कर उसे राज्य सौंप दिया और राजा उदयभानु अपने बडे पुत्र प्रलयंकर के साथ आत्मकल्याण के लिये वन की ओर प्रस्थान कर गये।

हैलो हैलो ....
ऐसा क्यों बोलते हैं आप

आप प्रतिदिन अपने फोन या मोबाइल से दिन में कई बार 'हैलो' कहकर बात प्रारंभ करते हैं। क्या आप जानते हैं यह हैलो कौन है और इसका प्रारंभ कहां से हुआ ? वायरलेस फोन का आविष्कार हमारे भारतीय वैज्ञानिक श्री जगदीश चन्द्र बसु ने किया था परन्तु ग्राहम बेल और एलीशा ग्रे नाम के दो व्यक्तियों ने यह तकनीक चुराकर फोन का आविष्कार किया। ग्राहम बेल अपनी पत्नी के होते हुये भी एक दूसरी स्त्री से प्रेम करता था उसका नाम 'जेनिफर हैलो' था। जब उसने फोन का आविष्कार किया तो उसने सर्वप्रथम अपनी प्रेमिका को फोन लगाकर कहा – हैलो ! हाउ आर यू ? लोगों ने बिना विचार किये उसका अनुकरण करना चालू कर दिया और फोन पर बात प्रांरम करते समय 'हैलो' कहने की परम्परा प्रारंभ हो गई।

सच में तो यह ग्राहम बेल का पाप परिणाम था जो अपनी पत्नी के होते हुये वह दूसरी स्त्री से प्रेम करता था और हम दिन में कई बार उस पाप करने वाली स्त्री 'हैलो' का नाम लेते हैं। इसलिये 'हैलो' कहना बंद कीजिये और जय जिनेन्द्र से अपनी बात प्रारंभ कीजिये।

आगामी बाल शिविर

देवलाली नासिक	– दिनांक 24 अप्रेल से 30 अप्रैल 2013
जबलपुर	– दिनांक 07 मई से 14 मई 2013
उज्जैन	– दिनांक 05 मई से 09 मई 2013
मैनपुरी	– दिनांक 24 मई से 30 मई 2013
इंदौर	– दिनांक 07 मई से 14 मई 2013
चैतन्यधाम, अहमदाबाद	– दिनांक 07 मई से 14 मई 2013
देवलाली (ग्रीष्मकालीन शिविर)	– दिनांक 23 मई से 07 जून 2013
कोटा	– दिनांक 15 जून से 24 जून 2013

जिनधर्म के संस्कारों से ओत–प्रोत है - सिया

ये है मुम्बई में रहनेवाली 6 वर्ष की सिया नितेश बाकलीवाल। बचपन से ही परिवार के धार्मिक संस्कारों में पल रही सिया को जिनधर्म की बहुत रुचि है। इसे24 तीर्थंकरों के नाम, बारह भावना, अनेक धार्मिक कवितायें एवं अनेक धर्म की अनेक प्यारी बातें याद हैं। इसने जमीकंद का त्याग किया है। चहकती चेतना परिवार ऐसे संस्कार देने के लिये सिया की माँ डॉ. रुषिता बाकलीवाल का अभिनंदन करता है। सिया के नाना डॉ. सुभाष चांदीवाल मुम्बई के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। वे अच्छे साधर्मी होने के साथ समाज को अपनी सेवायें निरपेक्ष भाव से प्रदान करते हैं।

मात्र 2 वर्ष की हैं अवधि – पर कमाल करती हैं

प्यारी मुस्कान वाली इस बेटी का नाम अवधि सौगानी। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में रहनेवाली अवधि, गौरव सौगानी और पायल सौगानी की सुपुत्री है। 2 वर्ष की छोटी सी उम्र में ही अवधि को णमोकार मंत्र, 4 कषाय, 5 पाप, 5 परमेष्ठी, 6 द्रव्य, 7 तत्व, 10 धर्म, 24 तीर्थंकरों के नाम अच्छी तरह से याद हैं। साथ ही वह प्रभु पतित पावन की स्तुति के साथ अनेक बाल गीत अच्छी तरह बिना सहयोग के बोलती है। चहकती चेतना के संपादक श्री विराग शास्त्री ने स्वयं फोन पर इस बच्ची से बात की। वह बाल गीत वीडियो अत्यंत रुचि से देखती है।

जैन कुल में जन्म लेने वाला बच्चे ऐसे ही होने ही चाहिये। संस्था परिवार दोनों बच्चियों के उज्जवल भविष्य की सुखद कामना करता है।

तीर्थंकर पहेली के उत्तर – 1. शांतिनाथ 2. अभिनंदननाथ 3. नेमिनाथ 4. श्रेयांसनाथ 5. पद्मप्रभ 6. सुपार्श्वनाथ 7. विमलनाथ 8. पुष्पदंत 9. संभवनाथ 10. मल्लिनाथ 11. पार्श्वनाथ 12. मुनिसुव्रतनाथ 13. धर्मनाथ 14. शीतलनाथ 15. आदिनाथ 16. महावीर 17. सुमतिनाथ 18. चन्द्रप्रभ 19. कुन्थुनाथ 20. नमिनाथ 21. अनंतनाथ 22. वासुपूज्य 23. अजितनाथ 24. अरनाथ

उत्तम त्याग

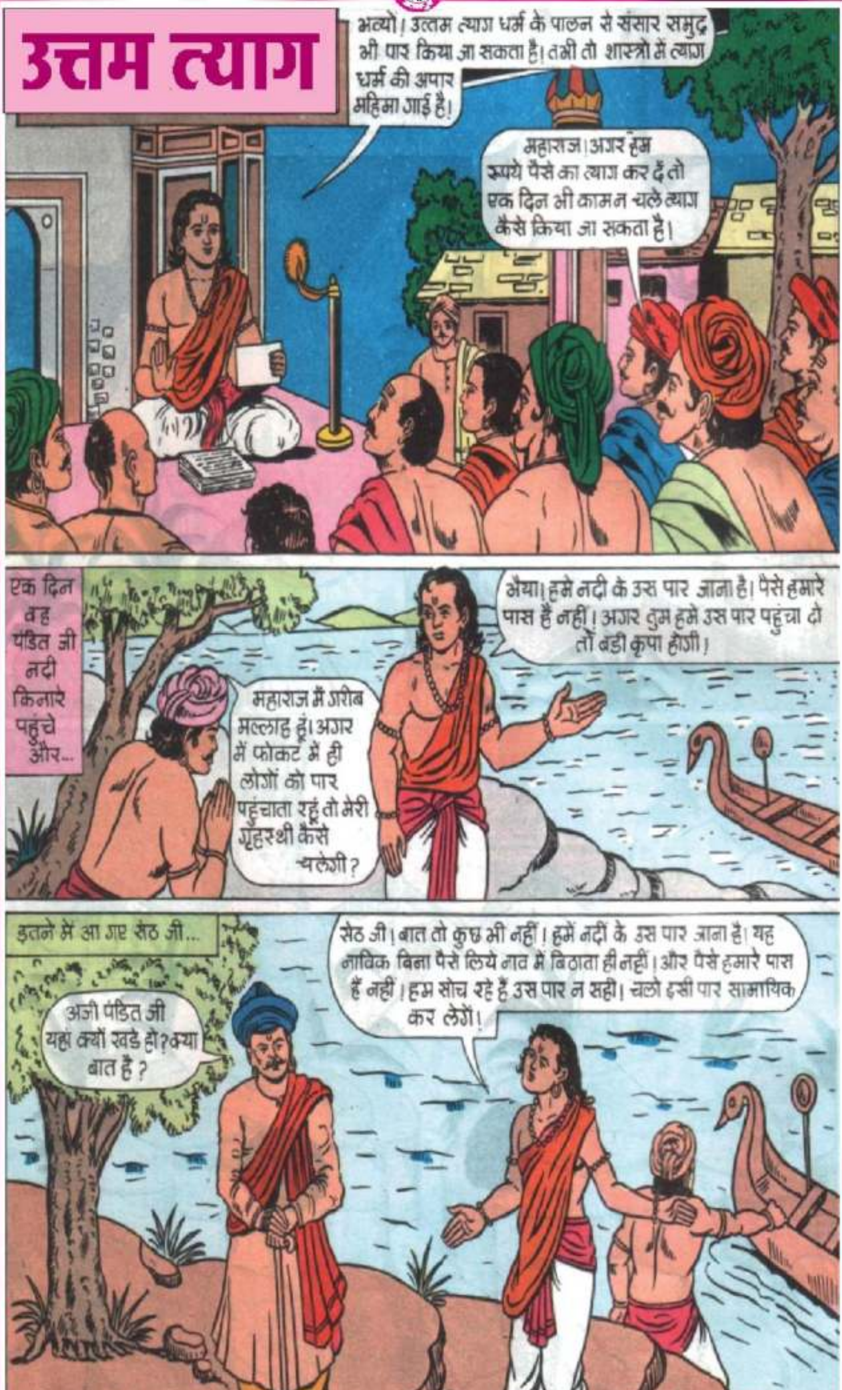
भव्यो! उत्तम त्याग धर्म के पालन से संसार समुद्र भी पार किया जा सकता है। तभी तो शास्त्रों में त्याग धर्म की अपार महिमा गाई है।
महाराज! अगर हम रूपये पैसे का त्याग कर दें तो एक दिन भी काम न चले त्याग कैसे किया जा सकता है।
एक दिन वह पंडित जी नदी किनारे पहुंचे और...
भैया! हमे नदी के उस पार जाना है। पैसे हमारे पास है नहीं। अगर तुम हमे उस पार पहुंचा दो तो बड़ी कृपा होगी।
महाराज मैं गरीब मल्लाह हूं। अगर मैं फोकट में ही लोगों को पार पहुंचाता रहूं तो मेरी गृहस्थी कैसे चलेगी?
इतने में आ गए सेठ जी...
अजी पंडित जी यहां क्यों खड़े हो? क्या बात है?
सेठ जी! बात तो कुछ भी नहीं! हमें नदी के उस पार जाना है। यह नाविक बिना पैसे लिये नाव में बिठाता ही नहीं। और पैसे हमारे पास हैं नहीं। हम सोच रहे हैं उस पार न सही। चलो इसी पार सामायिक कर लेगें।

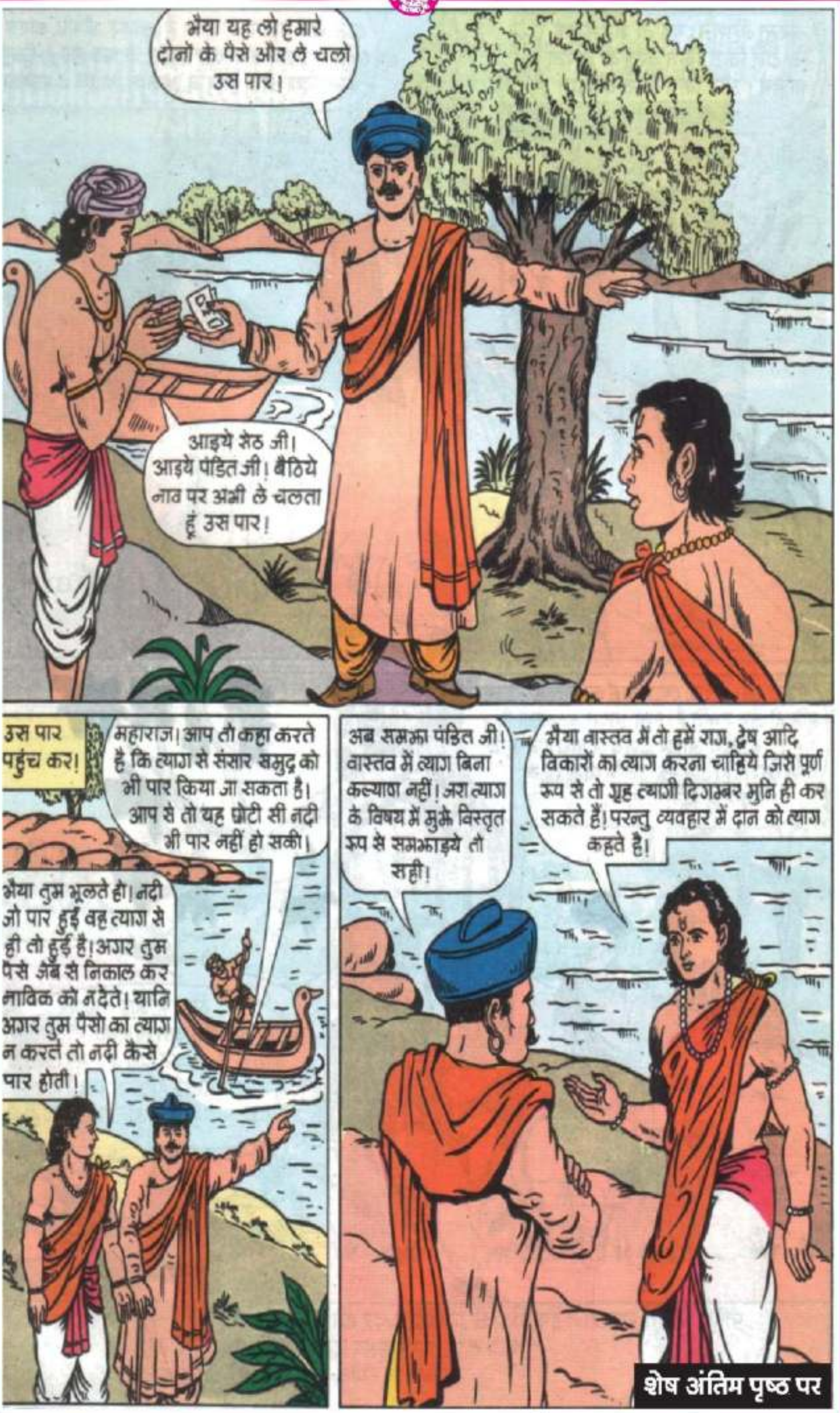
भैया यह लो हमारे दोनों के पैसे और ले चलो उस पार।
आइये सेठ जी। आइये पंडित जी। बैठिये नाव पर अभी ले चलता हूं उस पार।
उस पार पहुंच कर।
महाराज। आप तो कहा करते है कि त्याग से संसार समुद्र को भी पार किया जा सकता है। आप से तो यह छोटी सी नदी भी पार नहीं हो सकी।
भैया तुम भूलते हो। नदी जो पार हुई वह त्याग से ही तो हुई है। अगर तुम पैसे जेब से निकाल कर नाविक को न देते। यानि अगर तुम पैसो का त्याग न करते तो नदी कैसे पार होती।
अब समझा पंडित जी। वास्तव में त्याग बिना कल्याण नहीं। जरा त्याग के विषय में मुझे विस्तृत रूप से समझाइये तो सही।
भैया वास्तव में तो हमें राग, द्वेष आदि विकारों का त्याग करना चाहिये जिसे पूर्ण रूप से तो गृह त्यागी दिगम्बर मुनि ही कर सकते हैं। परन्तु व्यवहार में दान को त्याग कहते है।

शेष अंतिम पृष्ठ पर

समाचार कोना

टीकमगढ में जिनमंदिर का वार्षिकोत्सव एवं चैतन्य धाम का शिलान्यास संपन्न

मध्यप्रदेश की धार्मिक नगरी टीकमगढ में सीमंधर स्वामी दिगम्बर जिन मंदिर ज्ञान मंदिर का नवमा वार्षिकोत्सव अत्यंत उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ. दिनांक 19 फरवरी से 23 फरवरी तक आयोजित इस कार्यक्रम में श्री कर्मदहन मण्डल विधान का भव्य आयोजन हुआ. इस अवसर पर प्रख्यात विद्वान पण्डित श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन जबलपुर एवं श्री विराग शास्त्री जबलपुर के साथ स्थानीय विद्वान विदुषी ब्रह्मचारिणी ममतादीदी के स्वाध्याय का लाभ समाज को प्राप्त हुआ. दिनांक 22 फरवरी को पाठशाला संचालन एवं विद्वानों – साधर्मियों के आवास हेतु चैतन्यधाम भवन का शिलान्यास किया गया.

कार्यक्रम के सम्पूर्ण विधि–विधान श्री विराग शास्त्री जबलपुर के कुशल निर्देशन में संपन्न हुये. इस अवसर पर अनेक साधर्मियों ने चहकती चेतना की सदस्यता स्वीकार की.

विराग शास्त्री स्वतन्त्र जैन चिन्तन पत्रिका के संपादक मंडल में मनोनीत

राजस्थान के अजमेर नगर से प्रकाशित होने वाली सम्पूर्ण जैन समाज की प्रसिद्ध पत्रिका स्वतन्त्र जैन चिन्तन की कार्यकारिणी द्वारा चहकती चेतना के संपादक श्री विराग शास्त्री को स्वतन्त्र जैन चिन्तन के संपादक मण्डल में शामिल किया गया है. स्वतन्त्र जैन चिन्तन के संपादक श्री नरेन्द्रकुमार जैन ने यह जानकारी देते हुये बताया कि श्री विराग शास्त्री पत्रिका के बाल विभाग में संपादक के रूप में अपना योगदान देंगे.

दो और नये कम्प्यूटर गेम तैयार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा बाल संस्कारों के लिये किये जा रहे प्रयासों के अन्तर्गत आगामी प्रस्तुति के रूप में दो नये कम्प्यूटर गेम तैयार किये गये हैं। प्रथम गेम " मुक्ति सोपान" सांप–सीढ़ी के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें जीव निगोद से अपनी यात्रा प्रारंभ करके मोक्ष में पूर्ण कर सकता है। इस गेम के निर्माण में श्रीमति लीना सचदेव, घाटकोपर, मुम्बई का मुख्य आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

दूसरे गेम धार्मिक आचरण के आधार पर तैयार किया गया है। इस तरह अब 5 कम्प्यूटर गेम तैयार हो गये हैं। इस गेम की लागत राशि 25000/– रूपये है सहयोग करने के इच्छुक साधर्मी संपर्क करें।

जन्मदिवस की शुभकामनायें

आत्म ज्ञान की सिद्धि हो, हो मुक्ति का वास।
जन्म मरण से रहित हूँ, हो ऐसा विश्वास।।
सिद्धि पारेख, मुम्बई, 19 जनवरी

स्वस्ति आपका नाम शुभ, प्यारी है मुस्कान।
जन्म दिवस पर यही भावना शीघ्र बनो भगवान।।
स्वस्ति पारेख, मुम्बई,19 जनवरी

सिया आपका नाम शुभ, हो सीता सा काम।
शील सदा पालन करो, मिले सदा सन्मान।।
सिया बाकलीवाल, मुम्बई 16 जून 2013

अन्वय वीर का मार्ग है, मिले पूर्ण विश्राम।
जन्म मरण का नाश कर, बनो वीर भगवान।।
अन्वय जैन, सूरत 15 फरवरी 2013

ईर्या मुनि का मूलगुण, मुनिवर सदा महान।
सारे संकट दूर कर, पाओ मुक्ति विहान।।
ईर्या विराग जैन,जबलपुर 27 अप्रेल 2013

आगम का अभ्यास हो, आतम का श्रद्धान ।
श्री जिनदेव अनुराग हो, बनो शीघ्र भगवान ।।
आगम अनुराग जैन, जबलपुर 31 मई 2013

आन्या प्यारी सी बेटी, जिनधर्म संतान।
सदा सदा हंसती रहो, जैन धर्म वरदान।।
आन्या अभिषेक जैन, टीकमगढ़ 27 अप्रेल 2013

अक्षत अपना धर्म है, अक्षत आत्म स्वभाव।
अक्षत पद प्रगटाईये, हो जन्म मरण का अभाव।।
अक्षत नितेश जैन, मुम्बई 16 जनवरी 2013

प्यारी सी तुम अदिति हो, वीर प्रभु संतान।
जन्म दिवस पर यही भावना, करो भेद विज्ञान।।
अदिति नितेश जैन मुम्बई 18 फरवरी 2013

आज्ञा नन्हीं सी गुडिया हो, प्यारी सी मुस्कान।
जिनवर की आज्ञा सुनो, जीवन बने महान।।
आज्ञा आशीष जैन, टीकमगढ़ 2 मार्च 2013

100 रूपये की राशि भेजकर आप भी अपने बच्चों का नाम प्रकाशित करा सकते हैं !

जिस पेप्सी और कोका कोला को
आप अपने लिये स्वादिष्ट समझते हैं
उसके ये उपयोग देख कर आप हैरान हो जायेंगे.

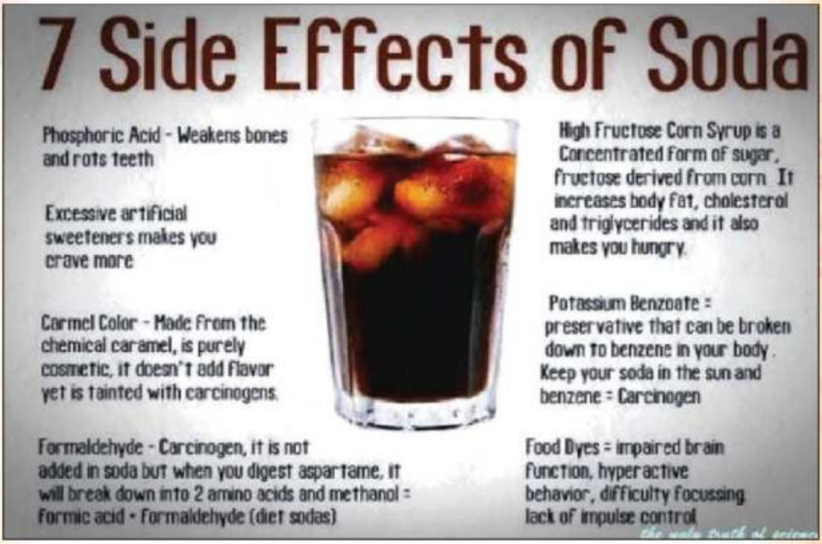

1. अनेक देशों में कोका कोला को सर्वोत्तम रस्ट बस्टर माना जाता है. अगर आपके किसी छोटे सामान में जंग लग गई हो तो इसे कोक में डुबोकर छोड़ दीजिये अगले दिन सुबह अच्छी तरह रगड़कर साफ करने से जंग साफ हो जाती है।
2. कोक में पाया जाने वाला साइटिक एसिड कांच साफ करने के काम आता है आप इसका उपयोग कार की विन्डो, घर की खिडकी के कांच साफ कर सकते हैं।

क्या आप जानते है की इन दोनों का ph value = 2.4 (सबसे गन्दा acid) है

जो आप की आंते जलने के लिए काफी है, ये तो आप का नुकसान है, लेकिन जिस देश मे लोग प्यास से और किसान खुदकुशी से मर रहा हो वह पर मै गन्ने, संतरे, नीबू आदि का जूस छोड़कर कोकाकोला, पेप्सी या कोई भी soft drink पिऊ तो मुझसे बडा देशद्रोही कोई नही, coca cola और pepsi हमारे देश से हर साल 5000 करोड रूपये अमरीका ले जाती है, जिससे भारत मे रूपये की कमी हो रही है

कोक का प्रयोग बदबू दूर करने में भी किया जाता है. कोक की एक बोतल को डिटर्जेंट के साथ मिलाकर बदबू वाले स्थान पर छिड़क दें सारी बदबू गायब हो जायेगी।

4. बरतन से काले दाग छुड़ाना
   – यदि भोजन बनाते समय बरतन के तली पर काली परत जम गई हो तो काली परत तक कोक भर दीजिये और उसे हल्की आंच पर तेज गरम कीजिये और आधे घंटे बाद धो लीजिये।
5. कपड़ों के दाग छुड़ाइये– कपड़ों पर ग्रीस, खून या तेल के दाग लग जायें तो डिटर्जेंट पाउडर के साथ कोक भी पानी में मिलाइये और उसमें कपड़े डालकर एक घंटे बाद धो लीजिये।
6. कीड़े मारने में– अनेक देशों में कोक का प्रयोग कीड़े मारने के लिये भी किया जाता है।

7. धमाके में कोक का उपयोग – मेन्टोस की एक बूंद को कोक की बोतल में डाल दिया जाता है तो केमिकल रिएक्शन के कारण उसका जोर से धमाका होता है।

जिस कोका कोला, पेप्सी के ऐसे प्रयोग किये जाते हों, वह पीकर अपने स्वास्थ्य से खिलवाड़ क्यों कर रहे हैं ? ब्रिटिश अखबार डेली मेल की एक रिपोर्ट के अनुसार पेप्सी और कोला कंपनी के 9 पेय पदार्थों में अल्कोहल मिलाया जाता है. इसका मतलब यह हुआ कि पेप्सी और कोका कोला पीने वालों का शराब पीने का पाप लगता है।

क्या इतना जानकर भी आप महा अभक्ष्य पेप्सी, को काकोला को नहीं छोड़ेंगे....... निर्णय आपके हाथ। जीभ के स्वाद के लिये अपने अमूल्य जीवन से खिलवाड़ मत कीजिये।

नई खबर पेप्सी में मरे हुये बच्चे का भ्रूण

जी हाँ ! ये मजाक नहीं सत्य है। बाबा रामदेव ने तो पेप्सी को टॉयलेट क्लीनर कहा था पर उससे भी बड़ी खबर है। पेप्सिको कंपनी अपने प्रोडक्ट PEPSICO NEXT में HEK-293(SENOMYX - DECEPTIVELY) नाम का केमिकल मिला रही है। यह केमिकल मानव भ्रूण की किडनी से बनता है। आपको विश्वास न हो तो आप इंटरनेट पर गूगल पर PEPSICO NEXT में देख सकते हैं। इतना भयानक कार्य करने वाली कंपनी के पदार्थों के सेवन का अर्थ है कि आप भी कत्ल करने वाले और मांस खाने वालों की अनुमोदना का महापाप करते हैं। सावधान अपने विवेक का प्रयोग कीजिये ---

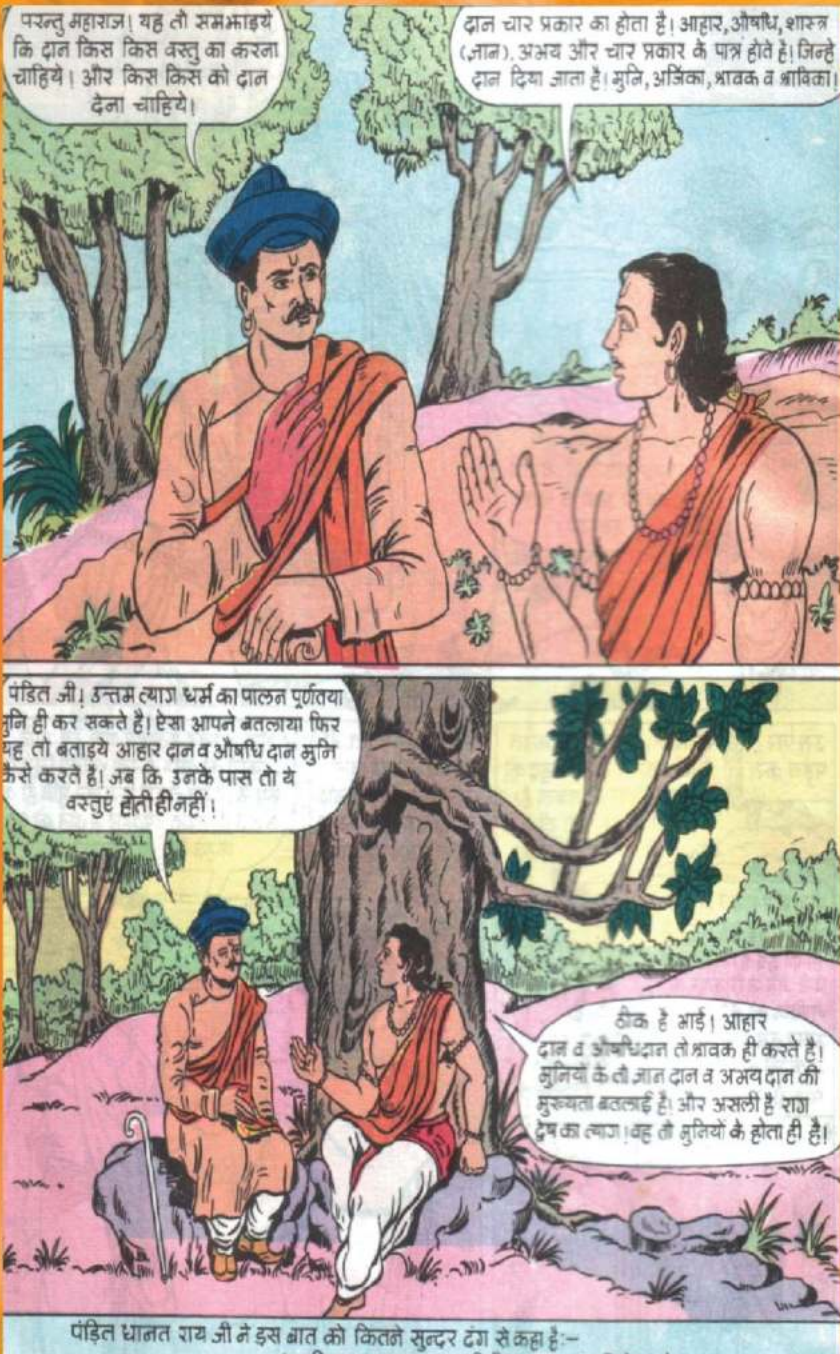
परन्तु महाराज। यह तो समझाइये कि दान किस किस वस्तु का करना चाहिये। और किस किस को दान देना चाहिये।
दान चार प्रकार का होता है। आहार, औषधि, शास्त्र (ज्ञान), अभय और चार प्रकार के पात्र होते है। जिन्हे दान दिया जाता है। मुनि, अर्जिका, श्रावक व श्राविका।
पंडित जी। उत्तम त्याग धर्म का पालन पूर्णतया मुनि ही कर सकते है। ऐसा आपने बतलाया फिर यह तो बताइये आहार दान व औषधि दान मुनि कैसे करते हैं। जब कि उनके पास तो ये वस्तुएं होती ही नहीं।
ठीक है भाई। आहार दान व औषधिदान तो श्रावक ही करते है। मुनियों के तो ज्ञान दान व अभय दान की मुख्यता बतलाई है। और असली है राग द्वेष का त्याग। वह तो मुनियों के होता ही है।
पंडित धानत राय जी ने इस बात को कितने सुन्दर ढंग से कहा है:-
" धनि साधु शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को,
" बिन दान श्रावक साधु दोनों लेहैं नाहि बोधि को।"

अब एक फोन लगाइये और
घर बैठे सी.डी. पाइये

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा विगत 12 वर्षों से बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रेरक साम्रगी का निर्माण कर रहा है। इस कम में अब तक बाल गीतों, पूजन, जिनधर्म की कहानियां, एनीमेशन आदि की 19 वीडियो सी.डी. तैयार की गईं हैं। साथ दो धार्मिक कविताओं की पुस्तक, एक कथा की पुस्तक, दो गेम भी तैयार किये हैं। अन्य योजनाओं पर कार्य चल रहा है।

हमारी संस्था के प्रतिनिधियों के द्वारा प्रत्येक स्थान पर सी.डी. लेकर पहुंचना संभव नहीं है और पूरे देश के अनेक साधर्मी किसी बड़े धार्मिक कार्यक्रम के अवसर पर ही यह सामग्री प्राप्त कर पाते हैं। हमने आप तक सी.डी. एवं अन्य सामग्री पहुंचाने के लिये के लिये दो योजनायें तैयार की हैं।

पहली योजना में आप हमारे मोबाइल नम्बर पर हमें संपर्क करें, हम आपको आपके द्वारा मांगी गई सी.डी. तुरन्त भेज देंगे और आप सी.डी. की राशि का भुगतान हमारे बैंक खाते में अपने नजदीकी बैंक शाखा में कर सकते हैं। तो देर किस बात की ? मोबाइल उठाइये और हमसे बात करके पाइये संस्था द्वारा तैयार सी.डी. और साहित्य।

दूसरी योजना के अंतर्गत आप हमारी संस्था के स्थायी सदस्य बन सकते हैं। स्थायी सदस्यता के लिये आपको 5000/– रू. की राशि जमा करना होगा। इसके अंतर्गत आपको 15 वर्षों तक ''चहकती चेतना'' पत्रिका प्राप्त होगी।

साथ ही संस्था द्वारा आगामी 15 वर्षों में निर्मित होने वाली समस्त सामग्री आपको निःशुल्क भेजी जायेगी। तो देर मत कीजिये। बार–बार सी.डी. मंगाने और सदस्यता शुल्क भरने की झंझट से मुक्ति पाइये।

संपर्क सूत्र

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434, 09373294684, E-mail : chehaktichetna@yahoo.com